Chapter - 1 अनुशासनम्

अभ्यासः

प्रश्न 1. एकपदेन उत्तरत

(क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् संकलितः?

उत्तर. तैत्तिरीय- उपनिषदः

(ख) सत्यात् किं न कर्तव्यम् ?

उत्तर. प्रमादः।

(ग) आचार्यः कम् अनुशास्ति?

उत्तर. अन्तेवासिनम्।

(घ) स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां किं न कर्तव्यम् ?

उत्तर. प्रमदितव्यम्।

(ङ) अस्माकं कानि उपास्यानि?

उत्तर. सुचरितानि।

प्रश्न 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत.

(क) आचार्यस्य कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि?

उत्तर. आचार्यस्य अनवद्यानि कर्माणि सेवितव्यानि।

(ख) शिष्यः किं कृत्वा प्रजातन्तुं न व्यवच्छेत्सीः?

उत्तर. शिष्यः प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं न व्यवच्छेत्सीः।

(ग) शिष्याः कर्मविचिकित्सा विषये कथं वर्तेरन् ?

उत्तर-शिष्याः कर्मविचिकित्सा विषये यथा ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः, आयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामाः तथा वर्तेरन्।

(घ) काभ्यां न प्रभदितव्यम् ?

उत्तर. स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रभदितव्यम्।

(ङ) ब्राह्मणाः कीदृशाः स्युः?

उत्तर. ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः स्युः ।

प्रश्न 3. रिक्त स्थानपूर्तिं कुरुत

उत्तर.

(क) वेदमनूच्याचार्यो ऽन्तेवासिनम् अनुशास्ति।

(ख) सत्यं वद धर्मं चर।

(ग) यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

(घ) यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः।

(ङ) एषा वेदोपनिषत्।।

प्रश्न 4. मातृभाषया व्याख्यायेताम्-

(क) देवपितृकार्याभ्यां न प्रभदितव्यम् ।

उत्तर. अर्थ-देवताओं तथा पितरों के कार्यों को करने में प्रमाद या आलस्य नहीं करना चाहिए। व्याख्या-प्रस्तुत पंक्ति में आचार्य अपने शिष्य को उपदेश देते हुए कहते हैं कि देवताओं के अर्थात् पूजा, अर्चना आदि कार्यों में बिल्कुल भी आलस्य नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार पितरों के कार्य अर्थात् श्राद्ध, तर्पण आदि कार्यों में भी बिलकूल असावधानी नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार आचार्य शिष्य को देवताओं तथा पितरों के कार्यों को सम्पन्न करने का उपदेश दे रहे हैं यहाँ।

(ख) यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

उत्तर. अर्थ-जो कार्य दोषरहित हैं उनका आचरण करना चाहिए।

व्याख्या-प्रस्तुत पंक्ति में आचार्य अपने शिष्य को उन कार्यों को करने का उपदेश दे रहे हैं जो दोषरहित हैं, पवित्र हैं। मनुष्य में कुछ न कुछ दोष स्वभाव से ही होते हैं, अतः उन दोषपूर्ण कार्यों का परित्याग तथा शुभ एवं पवित्र कार्यों का आचरण किया जाना चाहिए-यही आचार्य का अपने शिष्य के लिए उपदेश है।

प्रश्न 5. अधोनिर्दिष्टपदानां समानार्थकपदानि कोष्ठकात् चित्वा लिखत

उत्तर.

(क) अनूच्य = सम्बोध।

(ख) संविदा = सद्भावना।

(ग) हिया = लज्जया।

(घ) अलूक्षा - अरूक्षा

(ङ) उपास्यम् = अनुपालनीयम्।

(सदभावना, सम्बोध, लज्जया, अनुपालनीयम्, अरूक्षा)

प्रश्न 6. विपरीतार्थकपदैः योजयत -

(क)	सत्यम्	अलूक्षा
(ख)	धर्मम्	अश्रद्धया
(ग)	श्रद्धया	अनवद्यानि
(घ)	अवद्यानि	अधर्मम्
(ङ)	लूक्षाः	असत्यम्

उत्तर.

(क)	सत्यम्	असत्यम्
(ख)	धर्मम्	अधर्मम्
(ग)	श्रद्धया	अश्रद्धया
(घ)	अवद्यानि	अनवद्यानि
(ङ)	लूक्षाः	अलूक्षा

प्रश्न 7. अधोनिर्दिष्टेषु पदेषु प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत

उत्तर.

(क) प्रमदितव्यम् = प्र उपसर्ग, मद धातु + तव्यत् प्रत्यय ।

(ख) अनवद्यम् = अन् + वद् + यत्

(ग) उपास्यम् = उप उपसर्ग, आस् धातु + यत् प्रत्यय।

(घ) अनुशासनम् = अनु उपसर्ग, शास् धातु, ल्युट् प्रत्यय ।